IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 5, September 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

al of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

आलम शाह खान की कहानियों में सामान्य जन जीवन

प्रियंका यादव

सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, राजस्थान

सार

आलमशाह खान की रचनात्मक प्रतिभा काफी प्रखर है और वह सामान्य जीवन के असामान्य कहानीकार हैं। उनकी कहानियों में निम्न वर्ग की दुर्दमनीय दशा का सीधा सरल और असाधारण चित्रण है। उनकी कहानियाँ समाज के उस वर्ग से उठाई गईं हैं, जो बेबसी में अपना जीवन बसर करने को मजबूर हैं।

परिचय

नवाब शाह आलम खान (1921-2017) हैदराबाद , भारत के एक भारतीय उद्योगपति, शिक्षाविद् और सांस्कृतिक पारखी थे । उनके द्वारा चलाया गया मुख्य व्यावसायिक उद्यम हैदराबाद डेक्कन सिगरेट फैक्ट्री था । वह सुल्तान अनवर उल उलूम एजुकेशनल सोसाइटी के अध्यक्ष भी थे । शाह आलम खान मीर खान (जिन्हें नवाब ज़बरदस्त खान के नाम से भी जाना जाता है) के बेटे थे और हैदराबाद राज्य के एक संपन्न मुस्लिम परिवार से थे । 1921 में जन्मे, वह धन और विशेषाधिकार के माहौल में बड़े हुए। हालाँकि, जब वह एक बच्चा था तब उसने अपने पिता को खो दिया और जब वह किशोर था तब उसकी माँ की मृत्यु हो गई। उनके पिता की मृत्यु के बाद उनके पालन-पोषण में उनके मामा ने बड़ी भूमिका निभाई। कम उम्र में, जब वह एक कॉलेज के छात्र थे, शाह आलम की शादी मोहम्मद अब्दुस सत्तार की बेटी आबिदा खातून से हुई थी, जो एक सफल व्यापारी से उद्योगपति बने थे, जिन्होंने 1921 में हैदराबाद डेक्कन सिगरेट फैक्ट्री की स्थापना की थी । अब्दुस सत्तार की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी, और आबिदा, उनकी इकलौती संतान और वारिस, किशोरावस्था में ही थी जब उनकी शादी हुई। शाह आलम खान को आबिदा की माँ का समर्थन प्राप्त था क्योंकि वह अच्छी तरह से शिक्षित थे और एक सम्मानित नवाबी परिवार से थे, लेकिन उनके पास बहुत कम पैसा था या उनका परिवार बहुत कम था। [1] उनके परिवारों ने सामान्य हैदराबादी तरीके से विवाह की व्यवस्था की थी, और यह विवाह, जो उनके जीवन भर चला, सामंजस्यपूर्ण था। दंपति के सात बच्चे थे, सभी लड़के, जिनमें महबूब आलम खान भी शामिल थे , [2] जो हैदराबाद डेक्कन सिगरेट फैक्ट्री चलाते हैं और भोजन विशेषज्ञ हैं। [3]

अपनी शादी के कुछ ही समय बाद, शाह आलम खान और आबिदा खातून को बड़े पैमाने पर बदलाव के लिए तालमेल बिठाना पड़ा। ब्रिटिश राज के अंत , हैदराबाद राज्य के ख़त्म होने और भारत के विभाजन ने उस समाज को बदल दिया जिसमें वे रहते थे।[1,2]

शाह आलम खान ने जल्द ही सिगरेट फैक्ट्री की कमान संभाली, जो उनके ससुर की मृत्यु के बाद लड़खड़ा रही थी। चुनौतीपूर्ण सामाजिक स्थिति के बावजूद, उन्होंने कारखाने को सफलता की अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक पहुंचाया। सिगरेट का "गोलकुंडा" ब्रांड कई दशकों तक भारत में लोकप्रिय था। यह एक प्रमुख धन-स्पिनर बन गया, और शाह आलम खान, जो अपने सज्जन व्यवहार के बावजूद एक समझदार और यहां तक कि चतुर व्यवसायी थे, ने शहरी अचल संपत्ति, कृषि भूमि, एक डेयरी फार्म इत्यादि में बुद्धिमान निवेश किया। फिर भी, 1970 के दशक के मध्य तक, सिगरेट व्यवसाय कई कारणों से फिर से लड़खड़ा रहा था। कर व्यवस्था बहुत प्रतिकूल थी; सिगरेट को अब सरकार और समाज द्वारा समान रूप से हतोत्साहित किया गया। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि विदेशी प्रशिक्षित एमबीए द्वारा संचालित बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने सिगरेट और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के पूरे विपणन प्रतिमान को बदल दिया है।

शाह आलम खान सुल्तान अनवर उल उलूम एजुकेशनल सोसाइटी के अध्यक्ष थे । वह उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड और अकादमिक सीनेट के सदस्य भी थे । [4] उनकी अन्य रुचियां भी थीं। वह हैदराबाद रोज़ सोसाइटी के संस्थापक सदस्य थे और गुलाब की खेती के बारे में अपने गहन ज्ञान के लिए जाने जाते थे। उन्होंने अपनी गुलाब की किस्मों के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार जीते थे।[3,4]

शाह आलम खान का 23 अक्टूबर 2017 को 96 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके पार्थिव शरीर को उसी दिन शाम 5 बजे हिमायतनगर की मस्जिद-ए-सलीमा खातून में दफनाया गया। उनके परिवार में उनकी पत्नी, सात बेटे और कई पोते-पोतियां थीं। [5] [6] [7]

विचार-विमर्श

अपने लोगों की स्मृतियों को बचाना आवश्यक कार्य है क्योंकि इससे न केवल हम अपनी परंपरा को सुरक्षित रख पाते हैं बल्कि हमें आगे सही रास्ता खोजने में भी मदद मिलती है. राजनेता जहां जनता से शक्ति लेते हैं वहीं लेखक जनता को शक्ति प्रदान करते हैं. ये कहना है हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. असगर वजाहत का. खास अंदाज के कारण अविस्मरणीय हैं.

राजस्थान साहित्य अकादमी तथा आलम शाह खान यादगार समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में असगर वजाहत सहाब ने आलम शाह खान पर केंद्रित एक वेबसाइट का लोकार्पण भी किया.[5,6]

कार्यक्रम में चर्चित व्यंग्यकार फारुक आफरीदी ने कहा कि आलम शाह खान समाज के गरीब, पिछड़े, मजदूर और महिला वर्ग की चिंताओं और तकलीफों के चितेरे कथाकार थे. डॉक्टर खान ने मानव अधिकारों के हनन को लेकर अपनी कहानियां लिखीं और मजलूम, बेजूबान और हाशिये के समाज के पक्ष में खड़े होने का साहस दिखाया.

लेखक प्रबोध कुमार गोविल ने कहा कि आलम शाह खान का नाम उनके लिए आकर्षण था. आलम शाह साहब की कई कहानियां पढ़ीं. उनकी कहानियों पर मजबूत पकड़ थी, उनके साहित्य पर लम्बे समय पर चर्चा होती रहेगी. प्रबोध कुमार गोविल ने कहा कि आंचलिक-जीवन पर आलम शाह की गहरी पकड़ एक धरोहर है.

वरिष्ठ साहित्यकार गोविंद माथुर ने कहा कि राजस्थान के लेखकों में आलमशाह की चर्चा अधिक नहीं हुई है. आलमशाह खान सर्वहारा वर्ग की कहानियां लिखते थे, उनकी बात लोगों तक पहुंचाने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए और साहित्य अकादमी तथा अन्य संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए.

जाने-माने लेखक डॉ. सत्यनारायण व्यास ने कहा कि आलम शाह खान की आज भी जरूरत है. उनका कबीराना अंदाज गजब का था, वे स्पष्टवादी एवं निर्भीकता के प्रतीक थे. उनके चरित्र में दोहरापन नहीं था, वे विद्रोही प्रवृति के लेखक थे. कबीर की तरह विद्रोही प्रवृति के थे. उनकी कहानियां मनोरंजन के लिए नहीं थीं. जीवन के अस्तित्व का संघर्ष उनकी कहानियों में झलकता था.

ऊर्दू अफसानानिगार डॉ. सरवत खान ने कहा कि शाह की कहानियां आने वाली पीढ़ियां पढ़ेंगी और हमेशा प्रासांगिक रहेंगी. किशन दाधिच ने कहा कि शाह पर संस्मरणों की किताब आनी चाहिए. वे खुद्दारी के सिपाहसलार थे. उनकी भाषा अपने समय और परिवेश की भाषा है. समय के दुख को निकटता से देखते थे. उनकी कहानियों में समाज का दुख झलकता था.

कार्यक्रम में वरिष्ठ आलोचक प्रो. माधव हाड़ा ने वंश भास्कर और वचनिकाओं पर लिखी उनकी शोध-आलोचना की चर्चा की. प्रोफेसर हाड़ा ने कहा कि पुराने साहित्य में खान साहब की रुचि गति अद्‌भुत और अनुकरणीय थी.

युवा आलोचक पल्लव ने समांतर कहानी आंदोलन की चर्चा करते हुए उसमें खान की कहानियों की विशिष्टता को रेखांकित किया.[6,7]

इसी कार्यक्रम में एक अन्य सत्र की अध्यक्षता राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने की. उन्होंने कहा कि अकादमी राजस्थान के पुरोधाओं के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित करेगी. उन्होंने घोषणा की कि राजस्थान साहित्य अकादमी अगले वर्ष प्रोफेसर आलम शाह खान के सम्मान में दो दिवसीय आयोजन करेगी.

भारतीय लोक कला मंडल के निदेशक डॉक्टर लईक हुसैन ने आलम शाह खान की चर्चित कहानी 'मौत का मज़हब' की प्रस्तुति के विविध पक्षों की चर्चा की. उन्होंने कहा कि आलम शाह की चर्चित कहानियों में जिन मानवीय मूल्यों का चित्रण है उन्हें जन-जन तक पहुंचाना आवश्यक है.

युवा रंगकर्मी सुनील टाक में प्रोफेसर आलम शाह खान की कहानियों के नाट्य रूपांतरण एवं लघु फिल्म निर्माण की संभावनाओं की चर्चा की. कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर हेमेंद्र चंडालिया ने किया. कार्यक्रम के अंत में डॉ. तबस्सुम खान और समिति अध्यक्ष आबिद अदीब ने धन्यवाद ज्ञापित किया.

परिणाम

सुप्रसिद्ध लेखक डॉ.आलम शाह ख़ान की कहानियाँ वर्तमान समय में बहुत प्रासंगिक हो गई हैं। भारतीय सामाजिक जीवन का गहराई से अनुसंधान करके, पाठक की जड़ता को तोड़ते हुए उसे परिवर्तन के लिए उद्वेलित करती हैं । यही उनकी विशिष्टता है जो उनको 'वक्त से आगे का रचनाकार' बनाती है तथा उनकी रचनाओं को कालजयी बनाती है। ये विचार आलमशाह ख़ान यादगार समिति द्वारा आलमशाह ख़ान की पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम - आलमशाह खान: व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषयक तीन दिवसीय व्याख्यान श्रंखला में उभरकर आये।
कार्यक्रम की संयोजक व आलमशाह खान की पुत्री डॉ तराना परवीन ने बताया कि पहले दिन 'कहानी एवं डाक्टर आलमशाह खान' विषय पर बनास जन के सम्पादक और दिल्ली विश्वविद्यालय में व्याख्याता डा. पल्लव और वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने फेसबुक लाईव पर विषय प्रवेश कराते हुए प्रो. आलमशाह खान के संस्मरण सुनाऐ और वर्तमान समय में साहित्य की भूमिका के साथ ही आधुनिक कहानी के विकास में खान साहब की भूमिका की चर्चा की।
इसके पश्चात दिनांक 18 मई को आलम शाह खान:व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक व्याख्यान श्रृंखला फेसबुक पर लाइव की गई। इसकी प्रथम कड़ी में विजय रंचन पूर्व आईएएस एवं फिल्म क्रिटिक ने उनकी कहानी किराए की कोख को विचलित कर देने वाली कहानी बताया तथा उन्हें हिंदी का एकमात्र कथाकार बताया जिसने की विभत्स रस में लिखी अपनी कहानियों का अंत भी उसी रस में किया। प्रथम कड़ी में जयपुर के वरिष्ठ साहित्यकार ईश मधु तलवार ने किराये की कोख व एक और मौत, डा. हेमेन्द्र चण्डालिया ने मौत का मज़हब तथा आशीष सिंह ने चीर हरण के बाद कहानी के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।
कार्यक्रम की दूसरी कड़ी में 19मई को जयपुर की डा. प्रणु शुक्ला ने डा. आलमशाह ख़ान की कहानी अबला जीवन का गणित और भूखे फरीश्ते और खुशबू की दावत कहानी, डा.इन्दिरा जैन ने बर्थडे पार्टी व कुंआरा सफर, डा. गोपाल सहर ने खून खेती तथा डा. प्रमिला चण्डालिया ने मेहंदी रचा ताजमहल कहानी और कहानीकार की रचना प्रक्रिया पर विस्तार से चर्चा की।
आज पान्चवे दिन 21मई को सम्पन्न तीसरी कड़ी मे वरिष्ठ पत्रकार उग्रसेन राव ने ' बाँधो ना नाव इक ठाँव ' और ' तिनके का तूफ़ान ' कहानियों के बारे में बताया कि शिल्प , कथावस्तु , भावभूमि और प्रभाव-प्रेरणा की कसौटी पर डा.आलमशाह खान की सभी कहानियां निस्संकोच उच्च कोटि के साहित्य में स्थान बनाती हैं। उक्त दोनों ही कहानियों में विवाह के बंधन की नये सिरे से व्याख्या की गई है, जिससे पति - पत्नी के सम्बंध फिर से परिभाषित हुए है। अन्तिम वक्ता के रूप में प्रो. श्रीनिवासन अय्यर ने अ-नार कहानी का विश्लेषण किया जिसमें रचनाकार द्वारा थर्ड जेन्डर की पीड़ाओं को सामने लाया गया है। फेसबुक लाईव की कड़ियों के अन्त में आलमशाह ख़ान यादगार समिति के अध्यक्ष व मशहूर शायर आबिद अदीब ने आलमशाह खान के संस्मरण सुनाते हुए सभी भागीदारों को धन्यवाद दिया तथा भविष्य में भी समिति द्वारा साहित्यिक गतिविधिया तेज करने की घोषणा की। कार्यक्रम संयोजक डा. तराना परवीन ने सभी भागीदारों, आयोजन में सहयोग करने वालों तथा यादगार समिति के सदस्यों को धन्यवाद अर्पित किया।[5,6,7]

निष्कर्ष

देश के जाने-माने कथाकार प्रो. आलमशाह खान का कथा साहित्य जन सामान्य के जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। उनके पात्र गली मोहल्ले में रहने वाले लोग रहें है और उनकी भाषा आम लोगों की भाषा थी। उक्त विचार प्रो. आलमशाह खान यादगार समिति तथा माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के साझे में आयोजित यादगार सभा के मुख्य अतिथि प्रो. वेददान सुधीर ने व्यक्त किये। सभा की विशिष्ट अतिथि डॉ. मंजु चतुर्वेदी ने कहा कि प्रो. आलमशाह खान का साहित्य अंततः करूणा उत्पन्न करता है जो श्रेष्ठ साहित्य की विशेषता है। उनकी कहानियों के पात्र विषमता के लोक में जीते हुए मानवीय संवेदना जगाने वाले पात्र है। उनकी पीडा और व्यथा व्यवस्था के प्रति पाठक के मन में आक्रोश पैदा करती है किन्तु वहीं नहीं रूक जाती बल्कि उससे आगे बढकर वह पाठक के मन में पीडत-वंचित वर्ग के प्रति करूणा उत्पन्न करती है।

सभा के प्रारंभ में अंग्रेजी साहित्य विधा के प्रो. हेमेन्द्र चण्डालिया ने प्रो. आलमशाह खान के व्यक्तित्व व कृतित्व का परिचय देते हुए कर्यक्रम के उद्धेश्यों की जानकारी दी। प्रो. आलमशाह खान यादगार समिति के अध्यक्ष जाने माने शायर आबिद अदीब ने अतिथियों का स्वागत किया। राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय की हिन्दी विभाग की सह आचार्य डॉ. इन्दिरा जैन ने प्रो. आलमशाह

खान की कहानियों 'किराये की कोख', एक गधे की जन्म कुण्डली, सांसों का रैवड आदि पर केन्द्रित एक आलेख प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रो. आलमशाह खान की बहुचर्चित कहानी परायी प्यास का सफर का वाचन सुप्रसिद्ध कहानीकार एवं खान साहब की पुत्री डॉ. तराना परवीन द्वारा किया गया। प्रसिद्ध समालोचक हिमांशु पण्ड्या ने कहा कि प्रो. आलमशाह खान समान्तर कहानी आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षर थे किन्तु उन्होंने इससे इतर भी अनेक कहानियां लिखी। उनकी कहानियां भाषा और सौन्दर्यबोध के स्तर पर समान्तर कहानी की सीमाओं को लांघ जाती है। दुर्भाग्य यह हुआ कि उनका नाम समान्तर कहानी आंदोलन से इस प्रकार नत्थी कर दिया गया कि उनका समग्र मूल्यांकन संभव नहीं हो पाया। प्रो. सदाशिव श्रोत्रीय ने प्रो. आलमशाह खान को एक निर्भीक लेखक और साहसी व्यक्ति बताया। वरिष्ठ गीतकार किशन दाधीच ने प्रो. आलमशाह खान के साथ अपने आत्मीय संबंधों की चर्चा की तथा उन्हें अपनी श्रद्धांजलि पेश की। डॉ इन्द्र प्रकाश श्रीमाली ने आकाशवाणी में प्रो. आलमशाह खान की कहानियों के प्रसारण की चर्चा करते हुए कहा कि उन्होने स्वयं अपने, महेन्द्र मोदी और प्रो. आलमशाह खान तीनों के स्वर में उनकी कहानियों की रिकोर्डिंग कर प्रसारित की। वरिष्ठ पत्रकार उग्रसेन राव, डॉ. श्रीकृष्ण जुगनु आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रो. आलमशाह खान यादगार समिति की ओर से दुर्गाशंकर पालीवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. हेमेन्द्र चण्डालिया ने किया। कार्यक्रम में डॉ. कल्पना भटनागर, डॉ. परितोष दुग्गड, डॉ. फरहत खान, डॉ. आर. के दशोरा, प्रो. मुक्ता शर्मा, डॉ. मेहजबीन सादडीवाला, डॉ. कविता पारूलकर, डॉ. श्रद्धा तिवारी आदि उपस्थित थे।[7]

संदर्भ

1. "विनम्र, विनम्र और सौम्य, शाह आलम खान सच्चे अर्थों में एक नवाब थे, ऐसा पुराने हैदराबादियों का कहना है। " द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया । 24 अक्टूबर 2017. आईएसएसएन 0971-8257 । 23 अक्टूबर 2022 को लिया गया ।
2. ^ खान, समीर (9 मार्च 2022)। "हैदराबाद: नवाब शाह आलम खान की पत्नी का 90 साल की उम्र में निधन" । सियासत डेली । 23 अक्टूबर 2022 को लिया गया ।
3. ^ "नवाब जो शाही संस्कृति को याद करते हैं" । 18 मार्च 2016.
4. ^ "हैदराबाद के शाही नवाब शाह आलम खान का निधन" । Uniindia.com. 23 अक्टूबर 2017 । 20 जून 2018 को लिया गया .
5. ^ "शिक्षाविद् और उद्योगपति नवाब शाह आलम खान नहीं रहे" । डेक्कन क्रॉनिकल । 24 अक्टूबर 2017 । 11 अगस्त 2019 को लिया गया ।
6. ^ "नवाब शाह आलम खान नहीं रहे" । हिन्दू । 23 अक्टूबर 2017 - www.thehindu.com के माध्यम से।
7. ^ खान, समीर (9 मार्च 2022)। "हैदराबाद: नवाब शाह आलम खान की पत्नी का 90 साल की उम्र में निधन" । सियासत डेली । 23 अक्टूबर 2022 को लिया गया ।

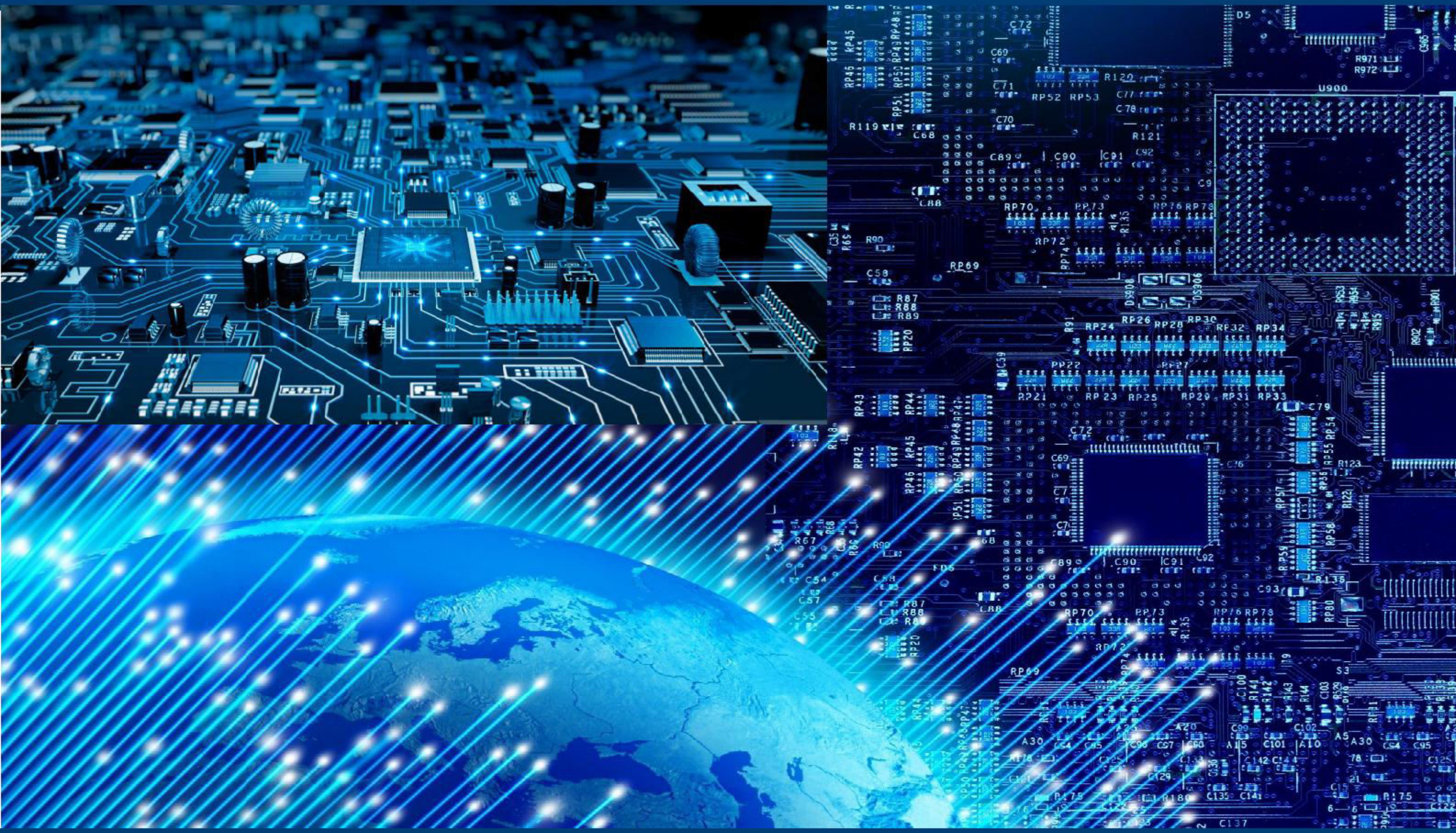

IJARASEM

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |